नवभारत समाचार

आप लिखें, मैं पढ़ता रहूंगा : राज्यपाल

आठ साहित्यकारों का किया सम्मान और कृतियों का विमोचन

भोपाल, 21 दिसंबर, नभासं. साहित्यकारों के सामने कुछ बोलना सूरज को दिया बताने जैसा है. वैसे भी मैं खेत का मजदूर आदमी हूं, आप लोगों का क्या सिखा सकता हूं. आप लोग नया साहित्य रचते रहें और मैं इसे पढ़ता रहूंगा.

राज्यपाल डॉ. बलराम जाखड़ ने देशभर के साहित्यकारों की संस्था ऑथर्स गल्ड ऑफ इंडिया के 34वें राष्ट्रीय सम्मेलन में यह बात कही. उन्होंने कहा कि मेरा जीवन पढ़-पढ़ कर बीता है और मुझे साहित्य से बेहद प्रेम है. डॉ. जाखड़ ने भारतीय साहित्य परंपरा को कर्मठता की निधि बताते हुए कहा कि हम आज भी किसी से पीछे नहीं है. दुनिया ने साहित्य की रचना भारत से सीखी है. भारतीय साहित्य के समान अन्य कोई साहित्य समृद्ध नहीं. इसके माध्यम से हमने आत्मा और परमात्मा के बीच संबंध स्थापित किया है.

कृतियों का विमोचन-इससे पहले राज्यपाल ने विभिन्न साहित्यकारों की नवीनतम कृतियों का विमोचन किया. इनमें डॉ. हीरालाल बाचोरिया की 'आकाशधर्म पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी', जनकराज जय की नंदीग्राम और सिंगूर पर आधारित कृति, शिवकुमार अवस्थी की 2 पुस्तकें, डा. अहिल्या मिश्रा की 'फांस की काई', सविता चढ्डा की 'द्वार पर दस्तक', डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र की 'शिखरनी', तथा सरोजनी प्रीतम की पांच पुस्तकों को विमोचन हुआ.

साहित्यकारों का सम्मान-राज्यपाल ने संस्था द्वारा साहित्यसेवा के लिए स्थापित 15 हजार राशि के साहित्य सर्वोदय अवार्ड से जालंधर की वीणा विच को उनकी कृति पिघलती शिला के लिए सम्मानित किया. सविता चढ्डा को शब्द बोलते हैं के लिए यह अवार्ड दिया गया. इसके अलावा कर्नाटक के वरिष्ठ साहित्यकार बालसूरी रेड्डी, भगवानदास यजमान, जीके हरजीत, पी. शुक्ला आदि को भी अवार्ड देकर सम्मानित किया गया.

विचार-विमर्श-इसके बाद विभिन्न साहित्यकारों ने 'विदेशों में फैलता भारतीय साहित्य और विकास के नए आयाम' विषय पर आयोजित चर्चा में भाग लिया. डॉ. बिदेश्वरी पाठक ने विषय पर बोलते हुए कहा कि भूमण्डलीकरण, विश्व ग्राम और विश्व मानवता संघ की स्थापना के साथ राजनीति और बाजार का उपयोग अधिक किया जा रहा है लेकिन भारत के साथ शेष विश्व के संवेदनात्मक संबंधों के लिए भारतीय साहित्य का समुचित प्रचार-प्रसार आवश्यक है. इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सरकार और समाज के साथ साहित्यकारों का दायित्व सर्वोपरि है. इससे पहले आथर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के महासचिव राजेन्द्र अवस्थी ने संस्था के बारे में विस्तार से जानकारी दी. कार्यक्रम का संचालन साहित्यकार राजेन्द्र जोशी ने किया.

राज्यपाल डॉ. जाखड़ ने साहित्यकारों को सम्मानित किया. साथ में हैं साहित्यकार राजेंद्र अवस्थी. नवभारत फोटो

...और राज्यपाल को अचानक याद आए गांधी-कार्यक्रम के शुरूआती सत्र का समापन होने के बाद राज्यपाल डॉ. जाखड़ जब जाने लगे, तब जाते-जाते उन्हें अचानक गांधी जी याद आ गए. वह वापस माइक पर गए और अपने कृषि मंत्री कार्यकाल का किस्सा सुनाया. उन्होंने बताया कि उस समय गांधीवाद पर अध्ययन करने भारत आए एक विदेशी ने उनसे कहा कि आपके यहां गांधीवाद तो जिन्दा है लेकिन गांधी को मार दिया. यह कहकर वे कार्यक्रम से चले गए.